B.A. Part - 2
Paper - III
(Philosophy Hons)

Q. नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ का वर्णन करें?

Ans. एक सुखमय एवं शांत जीवन के लिए मानव का नैतिकवान होना जरूरी है। नैतिकता की भी कुछ आवश्यक मान्यताएँ हैं, जिसे किसी घटना की व्याख्या करने के लिए बिना तर्क-वितर्क किए स्पष्ट मान लिया जाता है। इन मान्यताओं के अभाव में नैतिकता का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

नैतिकता के प्राथमिक आवश्यक मान्यताएँ हैं- (a) व्यक्तित्व (Personality) (b) विवेक (Reason) (c) इच्छा-स्वातंत्र (Freedom of will) (a) व्यक्तित्व - नैतिक निर्णय ऐच्छिक क्रिया पर ही किया जाता है मानव के वैसे कर्म जिसे वह नैतिक सिद्धांत के ज्ञान के बाद जान बूझ कर चेतनशील होकर किया हो, उसी पर नैतिक निर्णय दिया जाता है। नैतिकता का केन्द्रबिंदु व्यक्तित्व है। व्यक्तित्व से आत्मज्ञान, आत्म-चेतना एवं आत्मनियंत्रण का बोध होता है। व्यक्तित्व ही हमारे मानसिक और नैतिक जीवन का आधार है।

(b) विवेक - मनुष्य में दो गुण पाये जाते हैं - पशुत्व और विवेक। विवेकशीलता ही मनुष्य को पशु से अलग करती है। उचित-अनुचित, शुभ-अशुभ की पहचान विवेक के आधार पर ही व्यक्ति नैतिक नियमों को जानता है। मनुष्य के ऐच्छिक क्रियाओं में इच्छाओं का विचार, चुनाव, साध्य-साधन का विचार और संकल्प का प्रमुख स्थान रहता है, और विवेक के बिना इनका कोई मूल्य नहीं। अतः ऐच्छिक कर्म बिना विवेक के संभव नहीं हो सकता। अतः नैतिक निर्णय के लिए विवेक एक अनिवार्य नैतिक मान्यता है

(c) संकल्प-स्वातंत्र - ऐच्छिक कर्म संकल्प स्वातंत्र के बिना मुमकिन नहीं। उसी कर्म पर

Scanned with CamScanner

नैतिक निर्णय दिया जा सकता है, जिसे करने में व्यक्ति किसी बाह्य सत्ता द्वारा मजबूर न किया गया हो। मनुष्य में इच्छा-संघर्ष होता है और वह अपनी स्वतंत्र इच्छा से किसी एक को चुन लेता है और उसे पूरा करने के लिए ऐच्छिक कर्म करता है। अगर मनुष्य बाहरी दबाव के कारण कोई कर्म करता है तो उस कर्म करने की जिम्मेदारी की भावना खत्म हो जाती। जब कर्म में स्वतंत्रता (freedom) नहीं है तब फिर "चाहिए" का सवाल ही नहीं उठता।

नीतिशास्त्र का मुख्य संबंध "चाहिए" और "नहीं चाहिए" से है। अतः इच्छा-स्वतंत्र के बिना नैतिकता बेकार हो जाती है। डा० मार्टिन्यु के अनुसार "नैतिक निर्णय दो संभावनाओं के बीच चुनाव करने के लिए आत्मा को शक्ति प्रदान करता है और इसी से वह टिकता या गिरता है। मार्टिन महोदय के अनुसार या तो संकल्प स्वातंत्र सत्य है या नैतिक निर्णय एक भ्रम है।

संकल्प स्वातंत्र का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति मनमाने तरीके से कोई काम करे। व्यक्ति इच्छा संघर्ष के बाद किसी एक इच्छा का चुनाव करता है। और यह चुनाव व्यक्ति अपना चरित्र यानी "स्व" से नियंत्रित होकर करता है। कर्म करने में स्वतंत्रता और नियंत्रण दोनों का रहना जरूरी है। पर यह नियंत्रण बाहरी नहीं बल्कि आत्म-नियंत्रण (Self Determination) है। इच्छा स्वातंत्र को ही आत्म नियंत्रण भी कहते हैं। नैतिकता के लिए इसे मान्यता के रूप में स्वीकार करना जरूरी है।

Scanned with CamScanner